हुसैन[अ0] बिन अली[अ0] की महानता और हम

—मौलाना कौसर नियाज़ी साहब पाकिस्तान
अनुवादक : जनाब सै0 सज्जाद मुसन्ना साहब

हुसैन[अ0] की चर्चा वह चर्चा है जिसने मुसलमानों को हर युग में हर अत्याचार और दमन (जब्र व इस्तिब्दाद) के सामने सीने की ढाल बना लेने और इस्लाम की सत्यता को जीवित और अमर रखने के लिए (ज़िन्दा व जाविदां रखने के लिए) अपने अस्तित्व को मिटा देने की सीखी है। इमाम हुसैन[अ0] धर्म के मूल आदर्शों और मानव जीवन की इस देवी पद्धति से संघर्ष की महिमा और सच्चाई ज़ाहिर करने के लिए कर्बला के मैदान में आए। और अपना तथा अपनी सन्तान का खून देकर इस संघर्ष पद्धति को अमर कर गये। इस सत्यता का रास्ता रोकने के लिए आसुरी शक्तियों की भीड़ आई। जिसने सच्चाई के इस महान और अद्वितीय सेना नायक का सिर काट कर भाले पर बलन्द कर दिया और प्रसन्नता से ढोल पीटे। लेकिन इतिहास ने देखा कि सत्यता रक्त रंजित होने के बाद भी सिर उठाए है और झूठ की प्रत्येक प्रसन्नता झूठी और ग़लत सिद्ध हुई। हुसैन[अ0] आज भी जीवित हैं और यज़ीद एक युग हुआ कि विनाश के घाट उतर गया।

यह महान इस्लामी स्मृति संसार के कोने—कोने में विभिन्न रूपों से मनाई जाती है। हुसैन[अ0] का शोक मनाने वाले मातम करके इस यथार्थ को याद करते हैं तो वह लोग जो इस घटना को अनेक चिन्तन दृष्टि से देखते हैं, वह अपने ढंग से इसकी चर्चा करके गोष्ठयों को प्रकाश पुन्ज बनाते हैं। तरीक़ा जो भी हो उसमें मुश्तरक यह बात होती है कि सच्चाई को ऊंचा रखने के लिए जान देना मंहगा सौदा नहीं है।

याद का यही मुश्तरक पक्ष इस्लाम के माध्यम से मुसलमानों को नया खून और नया उत्साह देता रहा है। इस नये उत्साह से हर युग में कई नये सूरज उभरे हैं। मुस्लिम देशों का वर्तमान इतिहास ऐसे ही नये सूरजों का इतिहास है। अफ्रीका में, मध्य पूर्व में दक्षिण पूर्व एशिया में एक नहीं कई सवेरे हुए और हर सुबह की ऊषा में हुसैन[अ0] के खून की लाली प्रत्येक यथार्थवादी को दिखाई देती है।

खुली हुई बात है कि इस अदभुत घटना के यह मुश्तरका मूल्य ऐसे नहीं कि याद करने के रंग—ढंग के मतभेद पर इनकी बलि चढ़ाकर इन्हें अकारथ, अप्रभावी बना दिया जाए। यह उस मतभेद से कहीं महान, कहीं लाभकारी और कहीं ऊंचे दर्जे का इश्तिराक और साझा है जिस पर मतभेद न्यौछावर किये जा सकते हैं। हमें इस स्पष्ट भेद को महसूस करना चाहिए और हुसैन[अ0] के सर्वमान्य और हर प्रकार से निर्विवादित व्यक्तित्व की महिमा से वह लाभ उठाना चाहिए जो इसका सच्चा लाभ है। और इसे छोटे—छोटे विवादों का रूप देकर अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी नहीं मारनी चाहिए। याद मनाने के तरीक़ों का विवाद वास्तव में कोई अर्थ नहीं रखता और यदि यह

विवाद इमाम के वास्तविक उद्देश्य को नकारने पर उतर आए तो उसकी नकारात्मक हैसियत अति कष्टदायक और हृदय में चुभने वाली होगी।

हममें कोई इस बात का दावा नहीं कर सकता कि शीआ़ और सुन्नी दो अलग धर्म हैं। यह बात सर्वमान्य है कि शीआ़ और सुन्नी दो पथ हैं, यह एक ही धर्म की दो भिन्न व्याख्याएं हैं। दो विचार शैली हैं। जिन्होंने अपने–अपने ढंग से धर्म को समझा और इतिहास को पढ़ा। इतिहास स्वयं एक शास्त्रीय विषय है और इसे अपने–अपने ढंग से पढ़ने पर कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता।

दूसरे शब्दों में शीआ़ और सुन्नी विचार पथ में कोई बुनियादी भेद नहीं है। भेद केवल भाष्य और व्याख्या (तफ़सीर और ताबीर) का है। और मानव समुदाय में इस प्रकार के वैचारिक मतभेदों का न होना कल्पना से परे हैं। दो व्यक्तियों के बीच मतभेद हो सकता है तो क्या कारण है कि करोड़ों व्यक्तियों के बीच मतभेद न पाया जाए? मतभेद का अस्तित्व वरदान बन जाता है यदि क्रिया के केन्द्र और चिन्तन की एकता को वह छिन्न–भिन्न न करे। और यही मतभेद अभिशाप बन जाता है यदि इसके कारण क्रिया की केन्द्रीयता एवं एकता विघटित हो जाए।

हज़रत इमाम हुसैन[अ०] सबके थे, सबके हैं, और सभी के रहेंगे। उनका कोई अपना दल नहीं था उनको नाना की उम्मत यानी पंथ का प्रत्येक व्यक्ति प्यारा था। जब अचेत और नासमझ जल्लादों ने आपकी पवित्र गर्दन पर अत्याचार की तलवार चलाई उस समय भी आपकी ज़बान से इस पंथ के लिए आशीष निकली। इस रवायत के ऐतिहासिक शोध से बहस नहीं हैं लेकिन जो लोग इसे सही समझते हों वह इसके उपदेशात्मक पक्ष, (सबक़ आमोज़ पहलू) पर ध्यान दें कि इमाम हुसैन[अ०] का कटा हुआ सिर जब भाले पर चढ़ा हुआ था तो कुर्आन पढ़ रहा था। इमाम हुसैन[अ०] आज भी हमें कुर्आन पढ़ने और खुदा के उस आख़िरी संदेश की ओर बुलाते मालूम होते हैं जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि मुसलमान आपस में भाई–भाई हैं।

लेकिन संसार के हर दृष्टिकोण और हर विचार के साथ जो व्यवहार होता है मुसलमानों के भाईचारे की महान कल्पना और जीवनदायी दृष्टिकोण के साथ भी हुआ यानी यह दृष्टिकोण पुस्तकों में बड़े–बड़े शब्दों में लिख लिया गया और इसे सुन्दर जिल्दों में बन्द करके ताकों पर रख दिया गया।

यह बात कौन नहीं जानता कि शीआ और सुन्नी विचारधारा में सौ में से नब्बे बातों में एकमतता है अधिक से अधिक केवल दस बातों में मतभेद है। लेकिन होने यह लगा कि इन नब्बे बातों की चर्चा किसी गोष्ठी या सभा में नहीं होती और इन दस बातों की ध्वनि–प्रति–ध्वनि से हर मस्जिद गूंज रही है। कुर्आन ने तो अहले किताब को भी मुश्तरक बुनियादों पर एकता की दावत देने में हिचक नहीं दिखाई। परन्तु हम एक रसूल के पंथी होते हुए भी मुश्तरक बुनियादों पर एके की ज़रूरत महसूस नहीं करते। काश! हमारे धार्मिक नेता इस्लाम ही के उच्च आदर्शों के अनुसार जिन पर किसी का कोई मतभेद नहीं है कि ''आओ हम इन बातों को आधार बनाकर एक हो जाएं जो हममें समान हैं।'' एकता और एकमतता के प्रयत्नों का प्रारम्भ करें और एक दूसरे के विश्वासों का सम्मान करते हुए वाद–विवाद (शास्त्रार्थ) का वातावरण बनाए बिना आपस में समझने–समझाने की कोशिश करें।

हमें विश्वास है कि कुछ थोड़े से सिद्धान्तों को छोड़कर कुल मौलिक सिद्धान्तों पर एकमत हो जाएंगे। मुसलमानों पर यह विश्वास स्पष्ट है कि इमाम हुसैन[अ०] सत्यता पर थे और उन्होंने सत्यता की आवाज़ को ऊंचा करने के लिए

असत्य की अत्याचारी तलवार के नीचे अपनी और अपने सम्बन्धियों की गर्दन रख दी। और जो काम गर्दनें काटकर नहीं हो सकता था उसे गर्दने कटवाकर पूरा कर दिया। यह विश्वास सर्वमान्य है और इस विचार पर हम सब का ईमान अडिग है। परन्तु इसके बावजूद हम इतिहास की इस बड़ी त्रासदी पर ध्यान नहीं देते कि इस दृढ़तम आधार के होते हुए भी हम एक दूसरे के दुश्मन हो जाते हैं। आख़िर ऐसा क्यों है? 'हमारे इतिहास में यह विष कहां से आया' जिसने हमें इस सीमा तक अंधा कर दिया कि इतने बड़े बलिदान से लाभान्वित होने के स्थान पर हमने उसी को अपनी मौत का बहाना बना लिया।

मैं जब इतिहास उठाकर उसका अध्ययन करता हूं तो मुझे यह नाग फुंकारता दिखाई देता है और मैं अनुभव करता हूं कि इसकी निशानदही, इसका इंगित किया जाना ज़रूरी है।

सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि यह नाग केवल इतिहास के पन्नों तक सीमित नहीं। इसकी लम्बी ज़बान हमें आज भी अपने चारों ओर तड़पती और क़ौदती दिखाई देती है। वही स्वार्थ, वही छोटे–छोटे निजी लाभ, वही रोटी और शोरबे के प्याले की छीना–झपटी, मोटरों और वायुयानों पर यात्रा करने की इच्छा और लोगों को भड़काकर अपने अन्दर छिपे हुए शैतान को संतुष्ट करने की कामना और यह गर्व कि वह ज़बान के हिलाने या क़लम के डुलाने से ही आग लगा सकते हैं खून की नदियां बहा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि सही विचारधारा के विद्वान, उपदेशक और लेखक सामान्य मुसलमानों में इतनी चेतना पैदा कर दें कि वह मुसलमानों के इन खूनी सौदागरों के निकट न जाएं। और ऐसा वातावरण तैयार हो जाए। जिसमें लालची कठमुल्लाओं को मुसलमानों का खून बेचकर रोटी प्राप्त करने का साहस न हो सके।

●●●

बारह मुहर्रम

लेखक : जनाब शौकत साहब

आज जंगल में शहे गुलगूँ क़बा के फूल हैं
आज पझमुर्दा मज़ारे मुस्तफ़ा के फूल हैं

इस तरह उजड़ा न होगा कोई गुल्शन दहर में
जिस तरह पामाल बाग़े मुर्तज़ा के फूल हैं

खून में डूबी हुई लाशें पड़ी हैं बेकफ़न
कौन समझेगा यह बाग़े मुस्तफ़ा के फूल हैं

खूँचकाँ लाशों पे ग़ुरबत कह रही है यास से
किस क़दर रंगीं रियाज़े फ़ातिमा के फूल हैं

फ़ातेहा बेकस का है इसमें गुलो सौसन कहाँ
नील बाज़ू के हैं या दाग़े अज़ा के फूल हैं

कुछ जिगर ख़स्ता शहीदों की हैं लाशें बेकफ़न
कुछ रसन बस्ता रियाज़े फ़ातिमा के फूल हैं

अहले मातम जब लहू रोते हैं भर कर आहे सर्द
मैं समझता हूँ कि दामन में सबा के फूल हैं

शाह के अल्ताफ़ से हो जाएंगे 'शौकत' क़ुबूल
यह जो कुछ पझमुर्दा झोली में गदा के फूल हैं

●●●